बाल साहित्य को और दृश्यव्य, श्रव्य व पठनीय बनाया जाए : प्रो. दीक्षित

देश भर के बाल रचनाकारों को मिले साहित्य अकादमी के पुरस्कार

जासं ● लखनऊ : बाल साहित्य रचने के लिए रचनाकारों को बाल मनोविज्ञान और भाषा विज्ञान को आत्मसात करना चाहिए। आज कार्यशालाओं और अन्य प्रयासों से बच्चों के साहित्य को पठनीय, श्रव्य और दृश्यव्य बनाने की जरूरत है। ये विचार साहित्य अकादमी दिल्ली के भागीदारी भवन गोमती नगर में आयोजित इस वर्ष के बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने रखे।

समारोह को संबोधित करते साहित्यकार सूर्य प्रसाद दीक्षित ● जागरण

दो दिवसीय आयोजन के पहले दिन प्रो. दीक्षित ने कहा कि प्रौढ़ जब बच्चे होकर लिखेंगे तभी सार्थक बाल साहित्य उपजेगा। पराग, नंदन, गुड़िया, चंदामामा जैसी बाल पत्रिकाओं का नाम लेते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों को रोमांचक खेल, साहसिक यात्राओं, महापुरुषों की जीवनी और प्रेरक प्रसंग आकर्षित करते हैं। अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि जो भी लिखने वाला अपनी कलम शुद्ध करना चाहता है, उसे बाल साहित्य जरूर रचना चाहिए। अगर आतंकवादियों को बचपन में अच्छा साहित्य पढ़ने को मिलता तो वे आतंक नहीं, इंसानियत अपनाते। केंद्रीय साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने अमृतलाल नागर की किस्सागोई की चर्चा करते हुए कहा कि बाल साहित्य रचने के कल्पना की अलग उड़ान चाहिए। सचिव के श्रीनिवास राव ने कहा कि 70 सालों का साहित्यिक गतिविधियों के इतिहास में पहली बार तहजीब के गढ़ लखनऊ में बाल साहित्य पुरस्कार दिए जा रहे हैं। डा. अमिता दुबे, दयानंद पांडेय, चन्द्रशेखर, जाकिर अली रजनीश जैसे साहित्यकारों के संग संस्कृति कर्मी प्रतुल जोशी व अशोक बनर्जी आदि भी मौजूद थे।

इनको किया गया पुरस्कृत : रंजु हाजरिका- असमिया, दीपान्विता राय- बांग्ला, भार्जिन जेक'भा मोसाहारी- बोडो, विशन सिंह दर्दी- डोगरी, गिरा पिनाकिन भट्ट- गुजराती, कृष्णमूर्ति बिलिगेरे- कन्नड़, मुजफ्फर हुसैन दिलबर- कश्मीरी, हर्षा सद्गुरु शेटवे- कोंकणी, नारायणजी- मैथिली, उन्नी अम्मायंबलम्- मलयालम्, क्षेत्रिमयुम सुवदनी- मणिपुरी, भारत सासणे- मराठी, वसंत थापा- नेपाली, मानस रंजन सामल- ओड़िआ, कुलदीप सिंह दीप- पंजाबी, प्रहलाद सिंह झोरड़ा- राजस्थानी, हर्षदेव माधव- संस्कृत, दुगाई टुडु- संथाली, युमा वासुकि- तमिल और पामिदिमुक्कला चंद्रशेखर आजाद- तेलुगु को ताम्रफलक और 50 हजार रुपये की राशि देकर पुरस्कृत किया गया। अंग्रेजी पुरस्कार विजेता नन्दिनीसेन गुप्ता का पुरस्कार उनके प्रतिनिधि ने ग्रहण किया, जबकि देवेन्द्र कुमार- हिंदी, शम्सुर्रहमान फारुकी- उर्दू और लाल होतचंदानी सिंधी खराब स्वास्थ्य की वजह से नहीं आ पाए।